दृष्टि

तुमने देखा तो मानो सुधियों के फूल खिले,
इन्द्रधनुषी रंग गई, धूप की चुनरिया।
चन्दन सा मन हुआ, चॉदनी बदन हुआ,
रोशनी में नहा गई, जलभरी बदरिया।
नयनों ने सयनों से, बोले अनबोले बोल,
कानों पर रख के, कचनार की भुजरिया।
नेह के बुलउआ मिले गले मिले बिना मिले,
चुपचुप बातें कर गये बीच बजरिया।